पाठ 59

1. फरीसी और कानून के शिक्षक यीशु के चेलों से क्यों नाराज़ थे?

-क्योंकि यीशु के चेले बड़ों की परंपराओं को नहीं रखते थे।

2. बड़ों की परंपराएं क्या थीं?

-वे कानून थे जो फरीसियों ने बनाए थे जो उन्होंने कहा था कि लोगों को परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए पालन करना चाहिए।

3. क्या परमेश्वर हमें उन परंपराओं के अनुसार स्वीकार करते हैं जिन्हें हम रखते हैं?

-नहीं।

4. क्या परंपराओं को निभाने से हमारा दिल साफ हो जाएगा?

-नहीं।

5. यीशु ने फरीसियों को पाखंडी कहा। पाखंडी क्या है?

-एक पाखंडी वह होता है जिसके शब्द और कर्म समान नहीं होते, बल्कि पूरी तरह से भिन्न होते हैं।

6. भविष्यवक्ता यशायाह ने इन लोगों के बारे में क्या कहा?

-भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा कि ये लोग अपने होठों से कहते हैं कि वे ईश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन उनका दिल ईश्वर से दूर है।

7. परमेश्वर फरीसियों की उपासना को क्यों स्वीकार नहीं करेगा?

-क्योंकि उनकी पूजा केवल उनके होंठों से थी, और उनके दिल से नहीं।

8. क्या परमेश्वर चाहता है कि लोग अपनी परंपराओं को उसकी पुस्तक, बाइबल में जोड़ें?

-नहीं।

-परमेश्वर ने बाइबल में जो कुछ कहा है, उसमें हमें कभी भी कुछ जोड़ना या घटाना नहीं चाहिए।

9. लोग अशुद्ध हाथों से या अशुद्ध भोजन से अशुद्ध क्यों नहीं हो जाते?

-क्योंकि अशुद्ध हाथ और अशुद्ध भोजन हृदय को स्पर्श नहीं करते।

10. क्या हम जो खाते हैं या नहीं खाते हैं, क्या वह हमें ईश्वर को स्वीकार्य बनाता है?

-नहीं।

11. क्या हम जो पहनते हैं या नहीं पहनते हैं वह हमें परमेश्वर को स्वीकार्य बनाता है?

-नहीं।

12. यीशु ने क्या कहा जो मनुष्य को अशुद्ध करता है?

-यिशु ने कहा कि जो भीतर है वह मनुष्य को अशुद्ध करता है।

13. ऐसी कौन सी बुराइयाँ हैं जो हम सबके दिलों में हैं?

-बुरे विचार, यौन अनैतिकता, चोरी, हत्या, व्यभिचार, लालच, द्वेष, छल, अशिष्टता, ईर्ष्या, बदनामी, अहंकार और मूर्खता।

14. उस दृष्टान्त में जो यीशु ने बताया, वे दो लोग कौन थे जो मन्दिर में प्रार्थना करने गए थे?

-एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेने वाला।

15. परमेश्वर ने फरीसी को क्यों अस्वीकार किया?

-क्योंकि फरीसी ने विश्वास नहीं किया कि उसका मन अशुद्ध है।

-क्योंकि फरीसी ने विश्वास नहीं किया कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

16. परमेश्वर ने कर संग्रहकर्ता को क्यों स्वीकार किया?

-क्योंकि चुंगी लेने वाला जानता था कि उसका दिल अशुद्ध है।

-क्योंकि चुंगी लेने वाला जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-क्योंकि चुंगी लेने वाले ने उसे बचाने के लिए परमेश्वर को पुकारा।

-एक दिन यीशु ने अपने शिष्यों से एक प्रश्न पूछा।

आइए पढ़ें मरकुस 8:27-28

27-यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के आसपास के गांवों में गए। रास्ते में उसने उनसे पूछा, "लोग मुझे क्या कहते हैं?"

28-उन्होंने उत्तर दिया, “कुछ लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले कहते हैं; दूसरे कहते हैं एलिय्याह; और अन्य, जो भविष्यद्वक्ताओं में से एक हैं।”

-यीशु ने अपने शिष्यों से क्या प्रश्न पूछा था?

-"लोग कहते हैं कि मैं कौन हूं?"

-शिष्यों ने क्या उत्तर दिया?

-कुछ लोगों ने सोचा कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था।

-कुछ लोगों ने सोचा कि यीशु एलिय्याह है।

-कुछ लोगों ने सोचा कि यीशु उन नबियों में से एक थे जो जीवन में वापस आ गए थे।

-लोगों ने क्यों सोचा कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था?

-क्योंकि राजा हेरोदेस ने जॉन द बैपटिस्ट को मार डाला था, कुछ लोगों ने सोचा कि यीशु जॉन द बैपटिस्ट था जो जीवन में वापस आ गया था।

-क्या यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था?

-नहीं।

-लोगों ने क्यों सोचा कि यीशु एलिय्याह था?

-एलियाह कौन था?

-एलियाह परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता था जो मरा नहीं था, परन्तु परमेश्वर के द्वारा स्वर्ग में ले जाया गया था।

-क्या यीशु एलिय्याह था?

-नहीं।

-लोगों ने क्यों सोचा कि यीशु उन नबियों में से एक थे जो जीवन में वापस आ गए थे?

-क्योंकि भविष्यवक्ता हमेशा ईश्वर की बात करते थे और लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाते थे।

-क्या यीशु उन नबियों में से एक था जो फिर से जीवित हो गए थे?

-नहीं।

-यीशु ने आगे अपने शिष्यों से क्या प्रश्न पूछा?

आइए पढ़ें मरकुस 8:29

29- "लेकिन तुम्हारा क्या?" यीशु ने पूछा। "आपको किसने कहा कि मैं कौन हूं?" पतरस ने उत्तर दिया, “तू ही मसीह है।”

-यीशु ने आगे अपने शिष्यों से क्या पूछा?

-"आपको किसने कहा कि मैं कौन हूं?"

-पीटर ने क्या जवाब दिया?

-"आप मसीह हैं।"

-पीटर जानता था कि यीशु ही वह मसीह है जिसे परमेश्वर ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा से वादा किया था।

-पतरस जानता था कि यीशु ही वह मसीह है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से की थी।

-पतरस जानता था कि यीशु ही मसीह है, उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

-भले ही यीशु ने यहूदियों को कई बार बताया था, लेकिन बहुत से यहूदी नहीं मानते थे कि यीशु ही उद्धारकर्ता है।

-भले ही यीशु ने यहूदियों के सामने कई चमत्कार किए हों, लेकिन कई यहूदी यह नहीं मानते थे कि यीशु ही उद्धारकर्ता है।

-यदि हम यह नहीं मानते कि यीशु ही उद्धारकर्ता परमेश्वर है, तो क्या हम बचाए जा सकते हैं?

-नहीं।

-यीशु ने आगे अपने शिष्यों से क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 8:30

30-यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में किसी को न बताएं।

-यीशु ने अपने चेलों से अपने बारे में किसी को न बताने के लिए क्यों कहा?

-यीशु नहीं चाहते थे कि लोग किसी और की वजह से विश्वास करें।

-यीशु चाहते थे कि लोग अपने दिल से विश्वास करें।

-अगर हम यीशु पर विश्वास करते हैं, तो यह विश्वास हमारे अपने दिलों से आना चाहिए।

-हम यीशु पर किसी और से विश्वास नहीं कर सकते।

-इसके बाद ईसा ने आने वाली बातों के बारे में शिष्यों को पढ़ाना शुरू किया।

आइए पढ़ें मरकुस 8:31

31-तब यीशु ने उन्हें यह उपदेश देना आरम्भ किया, कि मनुष्य के पुत्र को बहुत दुख उठाना होगा, और पुरनिए, और महायाजक और व्यवस्था के शिक्षक उसे तुच्छ समझेंगे, और वह मार डाला जाए, और तीन दिन के बाद जी उठे।

-जो आ रहा था उसके बारे में यीशु ने अपने शिष्यों को क्या सिखाया?

-कि लोगों के नेता यीशु को मार डालेंगे, लेकिन वह तीन दिनों के बाद मरे हुओं में से जी उठेगा।

-यीशु को कैसे पता चला कि क्या आ रहा है?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर हैं और सब कुछ जानते हैं।

-ऐसा कुछ भी नहीं है जो यीशु नहीं जानता।

-यीशु जानता था कि लोगों के नेता उसे मार डालेंगे।

-यीशु भी जानता था कि उसे मरना ही है।

-लेकिन यीशु यह भी जानता था कि वह तीन दिन बाद मरे हुओं में से जी उठेगा।

-क्या आपको याद है कि योना बड़ी मछली के पेट में कितने दिन और रात था?

-तीन दिन और तीन रातें।

-जिस तरह योना तीन दिन और तीन रात बड़ी मछली के पेट में था, उसी तरह यीशु भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के पेट में रहेगा।

-जिस प्रकार परमेश्वर ने योना को तीन दिन और तीन रातों के बाद फिर से जीवित किया, उसी प्रकार परमेश्वर भी तीन दिन और तीन रातों के बाद यीशु को फिर से जीवित करेगा।

-इसके बाद यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ एक ऊंचे पहाड़ पर ले गया।

आइए पढ़ें मरकुस 9:2-3

2-छह दिन के बाद यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया और एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया, जहाँ वे अकेले थे। वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तर किया गया।

3-उसके कपड़े चमकदार सफेद हो गए, दुनिया में कोई भी उन्हें ब्लीच नहीं कर सकता था।

-पहाड़ पर यीशु के साथ क्या हुआ?

-यीशु को पतरस, याकूब और यूहन्ना से पहले रूपांतरित किया गया था।

-इसका क्या अर्थ है कि यीशु का रूपान्तर हुआ था?

-इसका मतलब है कि ईश्वर जो यीशु के अंदर था, बाहर की तरफ चमक रहा था।

-भले ही यीशु के पास बाहर से एक मानव शरीर था, लेकिन वह अंदर से परमेश्वर थे।

-क्या तुम्हें वह तम्बू याद है जिसे मूसा और इस्राएलियों ने जंगल में बनाया था?

-तंबू के बाहर जानवरों की खालें थीं, लेकिन अंदर परमेश्वर की महिमा थी।

-लोगों ने जब यिशु की तरफ देखा तो उन्हें बस बाहर एक आदमी नजर आया।

-लेकिन अंदर से, यीशु परमेश्वर थे।

-यीशु पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य थे।

-अचानक, यीशु के बगल में दो आदमी दिखाई दिए।

आइए पढ़ें मरकुस 9:4

4-और एलिय्याह और मूसा उनके साम्हने प्रकट हुए, जो यीशु से बातें कर रहे थे।

-एलियाह कौन था?

-एलियाह ईश्वर का एक नबी था जो यीशु के जन्म से पहले पृथ्वी पर रहता था।

-कई साल पहले, एलिय्याह के मरने से पहले, परमेश्वर उसे स्वर्ग में ले गया था।

-मूसा कौन था?

-मूसा वह था जिसने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला था।

-कई साल पहले, मूसा की मृत्यु हो गई थी, और परमेश्वर मूसा को स्वर्ग में ले गया था।

-क्योंकि एलिय्याह और मूसा परमेश्वर में विश्वास करते थे, वे कई वर्षों से परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रह रहे थे।

-एलिय्याह और मूसा पृथ्वी पर कैसे लौटे?

-परमेश्वर पिता ने एलिय्याह और मूसा को यीशु से बात करने के लिए स्वर्ग से नीचे भेजा।

-परमेश्वर क्यों चाहता था कि एलिय्याह और मूसा यीशु के साथ बात करें?

-परमेश्वर चाहते थे कि एलिय्याह और मूसा यीशु की आने वाली मृत्यु के कारण यीशु को प्रोत्साहित करें।

-आगे क्या हुआ?

आइए पढ़ें मरकुस 9:5-8

5-पतरस ने यीशु से कहा, “हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है। आइए हम तीन आश्रयों को बनाएं - एक तुम्हारे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए।"

6-(उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, वे बहुत डरे हुए थे।)

7-फिर एक बादल प्रकट हुआ, और उन पर छा गया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा पुत्र है, जिस से मैं प्रीति रखता हूं। उसे सुनो!"

8-अचानक जब उन्होंने चारों ओर देखा, तो उन्होंने अपने साथ यीशु को छोड़ और किसी को नहीं देखा।

-बादल से निकलने वाली आवाज किसकी थी?

-पिता परमेश्वर।

-परमेश्वर पिता ने शिष्यों से क्या कहा?

-“यह मेरा बेटा है, जिससे मैं प्यार करता हूँ। उसे सुनो!"

-पिता परमेश्वर का क्या मतलब था?

-पिता परमेश्वर का मतलब था कि यीशु वास्तव में उद्धारकर्ता परमेश्वर थे, जिनसे वह बहुत प्यार करते थे।

-क्योंकि यीशु उद्धारकर्ता परमेश्वर था, परमेश्वर चाहता था कि चेले यीशु की सुनें।

-आज, क्या परमेश्वर हमसे स्वर्ग से बात करते हैं?

-नहीं।

-क्यों नहीं?

-क्योंकि जो कुछ परमेश्वर हमसे कहना चाहता है वह उसकी पुस्तक, बाइबिल में लिखा गया है।

-परमेश्वर चाहता है कि हम यीशु और उसके वचनों को सुनें जो परमेश्वर की पुस्तक, बाइबल में लिखे गए हैं।